

अंडमान और निकोबार के लिये एक सतत् भवष्य की रूपरेखा

यह एडिटरियल 14/08/2024 को 'इंडियन एक्सप्रेस' में प्रकाशित [“How a wildlife sanctuary in the Great Nicobar Island was made to vanish”](#) लेख पर आधारित है। इसमें पर्यावरणीय कुप्रबंधन और कानूनी पैतरेबाजी की भयावह वास्तविकता को सामने लाया गया है जो भारत के तटीय क्षेत्रों, विशेष रूप से अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के नाजुक पारस्थितिकी तंत्र को खतरे में डाल रहा है।

प्रलमिस के लिये:

[ग्रेट निकोबार द्वीप परियोजना](#), [गैलाथिया खाड़ी](#), [अंडमान और निकोबार द्वीप समूह](#), [प्रवाल भित्ति](#), [एकट ईस्ट नीति](#), [अंडमान और निकोबार कमांड](#), [वर्ष 2014 की हिंद महासागर सुनामी](#), [नवीकरणीय ऊर्जा](#), [मलक्का जलडमरूमध्य](#), [जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल](#), [एल नीनो दक्षिणी दोलन](#)।

मेन्स के लिये:

भारत के लिये अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का महत्त्व, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह से संबंधित प्रमुख चुनौतियाँ।

[गैलाथिया खाड़ी](#) में 42,000 करोड़ रुपए के ट्रांसशपिमेंट पोर्ट के इर्द-गिर्द केंद्रित [ग्रेट निकोबार आइलैंड प्रोजेक्ट](#) भारत में विकास महत्त्वाकांक्षाओं और [पर्यावरण संरक्षण](#) के बीच के तनाव को प्रकट करता है। इस क्षेत्र की [समुद्र जैव विविधता](#)—जिसमें [लुप्तप्राय समुद्री कछुओं](#) और [स्थानिक निकोबार मेगापोड के नेस्टिंग](#) स्थल के साथ ही कोरल कॉलोनियाँ और मैंग्रोव शामिल हैं, के बावजूद अधिकारियों ने कई विवादास्पद नरिणय लेते हुए परियोजना को आगे बढ़ाया है। इन नरिणयों में वन्यजीव अभयारण्य को गैर-अधिसूचित करना, सपष्ट उल्लंघनों के बावजूद पर्यावरण मंजूरी प्रदान करना और क्षेत्र के तटीय वनियमन क्षेत्र के दर्जे को पुनः वर्गीकृत करना शामिल है।

यह मामला वृहत-स्तरीय विकास परियोजनाओं को समायोजित करने के लिये पर्यावरण वनियमनों को कमजोर करने के प्रयास को उजागर करता है। इस प्रक्रिया में संदिग्ध प्रशासनिक ढाँच-पेंच, समीक्षा समितियों में संभावित हितों का टकराव और [खैजाना के साक्ष्य एवं संरक्षण अनिवार्यताओं की उपेक्षा](#) करना शामिल है। [अंडमान और निकोबार द्वीप समूह](#) में विकास लक्ष्यों के भारत के प्रयास [दीर्घकालिक पर्यावरणीय लागतों](#) और [भारत के पर्यावरण संरक्षण ढाँचे](#) की अखंडता के बारे में गंभीर चर्चा उत्पन्न करते हैं। यह एक अधिक संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता को रेखांकित करता है जो [गंभीरता से आर्थिक आकांक्षाओं के साथ-साथ पारस्थितिक संरक्षण](#) पर विचार करे।



//

भारत के लिये अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह का क्या महत्त्व है?

- **ब्लू इकोनॉमिक गेटवे:** ये द्वीप प्रमुख शपिंग मार्गों के चौराहे पर स्थित हैं, जो भारत की ब्लू इकोनॉमी पहलों के लिये अपार संभावनाएँ प्रदान करते हैं।
 - ग्रेट निकोबार में प्रस्तावित ट्रांसशपिंग पोर्ट का उद्देश्य इस रणनीतिक स्थान का लाभ उठाना है।
 - यह संभावित रूप से प्रतिवर्ष 4 मिलियन ट्वेन्टी-फुट इक्विवलेंट यूनिट्स (TEUs) का संचालन कर सकता है, जो सिंगापुर जैसे प्रमुख बंदरगाहों का प्रतिस्पर्धी बन सकता है।

- द्वीप समूह की समृद्ध समुद्री जैव विविधता मत्स्य पालन, जलकृषि और समुद्री जैवप्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में भी अवसर प्रदान करती है, जो भारत की आर्थिक वृद्धि में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है।
- **पारस्थितिकीय भंडार:** **अंडमान और निकोबार द्वीप समूह** जैव विविधता का 'हॉटस्पॉट' है, जहाँ 9,100 से अधिक जीव-जंतु प्रजातियाँ पाई जाती हैं।
 - अंडमान में **परवाल भित्तियाँ** 11,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में वसित हैं, जबकि निकोबार में इनका प्रसार 2,700 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र तक है।
 - **लेदरबैक कछुए और निकोबार मेगापोड** जैसी प्रमुख प्रजातियों के लिये ये नेस्टिंग स्थल हैं।
 - यह अद्वितीय पारस्थितिकी तंत्र न केवल वैज्ञानिक अनुसंधान को समर्थन प्रदान करता है, बल्कि भारत को वैश्विक जैव विविधता संरक्षण पर्यासों में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में भी स्थापित करता है।
- **भू-राजनीतिक लाभ:** ये द्वीप दक्षिण-पूर्व एशिया में भारत की रणनीतिक पहुँच की महत्त्वपूर्ण रूप से वृद्धि करते हैं तथा इसकी 'एकट ईसट' नीति के लिये आधार का कार्य करते हैं।
 - ये इंडोनेशिया से महज 90 समुद्री मील की दूरी पर स्थित हैं, जो भारत को आसियान देशों के साथ कूटनीतिक, आर्थिक और सैन्य संलग्नता के लिये प्रवेश द्वार प्रदान करते हैं।
 - वर्ष 2001 में स्थापित अंडमान एवं निकोबार त्रसैवा कमान चीन की 'स्ट्रगि ऑफ परल्स' रणनीति का मुकाबला करते हुए क्षेत्र में शक्ति प्रदर्शन और संयुक्त अभियान चलाने की भारत की क्षमता को बढ़ाती है।
- **बंगाल की खाड़ी में प्रथम प्रतिक्रियाकर्ता:** ये द्वीप अपनी अवस्थिति के कारण संपूर्ण बंगाल की खाड़ी क्षेत्र के लिये आपदा प्रबंधन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
 - वे **सुनामी और चक्रवातों** के लिये पूर्व चेतावनी प्रणाली के क्रियान्वयन में भूमिका निभाते हैं, जहाँ **भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (INCOIS)** द्वारा प्रमुख नगिरानी स्टेशनों का संचालन किया जाता है।
 - वर्ष 2004 में **हृदि महासागर में आई सुनामी** के दौरान इन द्वीपों ने राहत पर्यासों के समन्वय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
 - प्रस्तावित **अवसंरचना विकास का उद्देश्य** इस क्षमता को बढ़ाना है तथा भारत को क्षेत्रीय मानवीय संकटों में एक विश्वसनीय प्रथम प्रतिक्रियादाता के रूप में स्थापित करना है।
- **ऊर्जा सुरक्षा:** अनुमान है कि **अंडमान अपतटीय बेसिन** में हाइड्रोकार्बन का बड़ा भंडार मौजूद है।
 - इन संसाधनों को विकसित करने से **भारत की ऊर्जा सुरक्षा में व्यापक वृद्धि** हो सकती है और आयात पर निर्भरता कम हो सकती है।
 - **नवीकरणीय ऊर्जा, विशेषकर महासागरीय तापीय ऊर्जा रूपांतरण और ज्वारीय ऊर्जा** के लिये इन द्वीपों की क्षमता सतत विकास और ऊर्जा नवाचार के लिये भी अवसर प्रस्तुत करती है।
- **सांस्कृतिक मेलजोल:** अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह **छह स्थानीय जनजातियों के नविकास क्षेत्र** हैं, जिनमें **सैंटनिलीज जनजाति** भी शामिल है जो विश्व के अंतिम संपर्कवहीन समुदाय में से एक है।
 - यह **अद्वितीय सांस्कृतिक विविधता** भारत के लिये स्वदेशी जीवन शैली के संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करने का उत्तरदायित्व एवं अवसर दोनों प्रस्तुत करती है।
 - द्वीप समूह का बहुसांस्कृतिक समाज, **मुख्य भूमि भारत, म्याँमार और ओपनिवेशिक इतिहास** के प्रभावों से मशरूति होकर भारत की सांस्कृतिक कूटनीति एवं समावेशी विकास मॉडल का सूक्ष्म रूप प्रस्तुत करता है।

अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह से संबंधित प्रमुख चुनौतियाँ क्या हैं?

- **संकट में स्वर्ग – पर्यावरण क्षरण:** अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह अपनी अद्वितीय जैव विविधता को संरक्षित करने और आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने के बीच एक गंभीर दुविधा का सामना कर रहे हैं।
 - **ग्रेट निकोबार में प्रस्तावित 42,000 करोड़ रुपए** के ट्रांसमिग्रेशन पोर्ट से महत्त्वपूर्ण पर्यावासों के लिये खतरा है।
 - इस परियोजना को समायोजित करने के लिये **गैलेथिया खाड़ी वन्यजीव अभयारण्य की अधिसूचना** रद्द करना संरक्षण पर विकास को प्राथमिकता देने का उदाहरण प्रस्तुत करता है।
 - यदि यह प्रवृत्ति जारी रही तो इससे अपरिवर्तनीय पारस्थितिक क्षति उत्पन्न हो सकती है, जिसका संभावित रूप **संजैव विविधता और जलवायु नियमन पर प्रभाव पड़** सकता है।
- **भू-राजनीतिक बिसात:** इन द्वीपों की रणनीतिक अवस्थिति, लाभप्रद होने के बावजूद, उन्हें **हृदि-प्रशांत भू-राजनीतिक तनाव** के केंद्र में रखती है।
 - हृदि महासागर में चीन की बढ़ती उपस्थिति—जिसकी पुष्टि उसकी 'स्ट्रगि ऑफ परल्स' रणनीति से होती है, महत्त्वपूर्ण सुरक्षा चुनौतियाँ उत्पन्न कर रही हैं।
 - मलक्का जलडमरूमध्य से निकटता, जिससे **भारत का लगभग 40% व्यापार परिवहन** होता है, रणनीतिक जटिलता की वृद्धि करती है।



- **अवसंरचनात्मक कमी:** अपने रणनीतिक महत्त्व के बावजूद ये द्वीप गंभीर अवसंरचनात्मक कमी से ग्रस्त हैं।
 - 572 द्वीपों में से केवल 38 पर ही लोगों का वास है और उनके बीच संपर्क भी सीमित है।
 - राजधानी पोर्ट ब्लेयर मुख्य भूमि से 1,200 किलोमीटर से अधिक दूर है, जिससे रसद एवं संसाधन आवंटन जटिल हो जाता है।
- **‘सांस्कृतिक चौराहा’:** अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह की मूल जनजातियाँ, जिनमें **जारवा**, **ऑंज** और **सेंटनिली** शामिल हैं, आधुनिकीकरण और बाहरी संपर्क के कारण अस्तित्व संबंधी खतरों का सामना कर रही हैं।
 - ग्रेट अंडमानी लोगों की संख्या 1850 के दशक में 5,000 से घटकर वर्ष 2021 में केवल 59 रह गई।
 - जारवा क्षेत्र से गुजरते अंडमान ट्रंक रोड के निर्माण से परस्पर संपर्क और संभावित शोषण में वृद्धि हुई है।
- **पर्यटन की कठिनी राह:** पर्यटन इन द्वीपों के लिये एक प्रमुख आर्थिक चालक है और यहाँ पर्यटकों की संख्या लगातार बढ़ रही है।
 - यद्यपि इससे आर्थिक लाभ प्राप्त होता है, लेकिन स्थानीय संसाधनों और पारस्थितिकी तंत्र पर दबाव भी पड़ता है।
 - द्वीपों को संवहनीय अवसंरचना विकास, अपशिष्ट प्रबंधन और संवेदनशील क्षेत्रों की सुरक्षा में चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।
- **जलवायु भेद्यता:** ये द्वीप जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का सर्वाधिक खतरा रखते हैं और इन्हें समुद्र-स्तर में वृद्धि, चक्रवात की तीव्रता में वृद्धि तथा वर्षा के बदलते पैटर्न से खतरों का सामना करना पड़ रहा है।
 - **जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (IPCC)** ने वर्ष 2050 तक इन द्वीपों के नचिले इलाकों के जलमग्न होने की आशंका जताई है।
 - वर्ष 2010 में समुद्र की सतह की तापमान वसिंतियों और **एल नीनो दक्षिणी दोलन (ENSO)** के कारण बड़े पैमाने पर प्रवाल वरिजन की घटना हुई, जिसके परिणामस्वरूप साउथ बटन द्वीप, हैवलॉक द्वीप, नॉर्थ बे, चड़ियाटापु और रेडस्कन द्वीप में लगभग 70% जीवित प्रवाल नष्ट हो गए।
- **प्राकृतिक आपदा हाटसपाट:** अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह भूकंपीय रूप से सक्रिय ज़ोन V में अवस्थित है, जिससे वे भूकंप और सुनामी के लिये अत्यधिक संवेदनशील हैं।
 - वर्ष 2004 में हिंद महासागर में आई वनाशकारी सुनामी, जिसने इन द्वीपों को बुरी तरह प्रभावित किया था, इस भेद्यता को उजागर करती है।
 - वर्ष 2009 में पोर्ट ब्लेयर के निकट 7.5 तीव्रता का भूकंप आया था, जिससे व्यापक क्षति हुई थी और इन द्वीपों के लिये भूकंपीय खतरा बने रहने का संकेत मिला था।

- इन द्वीपों की अवस्थिति और स्थलाकृति के कारण, वशिषकर मानसून के मौसम में, भूस्खलन की संभावना भी बनी रहती है।

अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के संबंध में भारत क्या कदम उठा सकता है?

- **सतत् अवसंरचना विकास:** एक व्यापक सतत् अवसंरचना योजना लागू की जाए, जहाँ नवीकरणीय ऊर्जा, जल संरक्षण और पर्यावरण-अनुकूल अपशिष्ट प्रबंधन को प्राथमिकता दी जाए।
 - डीजल जनरेटर पर निर्भरता कम करने के लिये सौर एवं पवन ऊर्जा प्रतष्ठितानों के विकास पर ध्यान केंद्रित किया जाए।
 - जल की कमी को दूर करने के लिये वर्षा जल संचयन प्रणालियाँ और अलवणीकरण संयंत्र स्थापित किये जाएँ।
 - पुनर्रचरण और कंपोस्टिंग पर बल देते हुए एक सुदृढ़ अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली स्थापित की जाए।
 - सुनिश्चित किया जाए कि सभी नए निर्माण कार्य हरित भवन मानकों का पालन करें तथा उनमें स्थानीय सामग्रियों और जलवायु प्रत्यास्थता के लिये अनुकूलित पारंपरिक डिजाइनों को शामिल किया जाए।
- **तटीय और समुद्री संरक्षण में वृद्धि करना: 'नो-टेक ज़ोन' (no-take zones) का विस्तार कर और कड़े प्रवर्तन उपायों को लागू कर मौजूदा समुद्री संरक्षित क्षेत्र नेटवर्क को सुदृढ़ किया जाए।**
 - अवैध मत्स्यग्रहण की समस्या से निपटने और लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा करने के लिये जल के नीचे ड्रोन एवं उपग्रह इमेजिंग जैसी उन्नत नगरानी प्रौद्योगिकियों में निवेश किया जाए।
 - समुदाय आधारित संरक्षण कार्यक्रम विकसित किया जाए, जहाँ स्थानीय मछुआरों को संवहनीय अभ्यासों और समुद्री पारस्थितिकी तंत्र की नगरानी में संलग्न किया जाए।
 - एक व्यापक प्रवाल पुनर्रस्थापन कार्यक्रम लागू किया जाए, जिसमें कृत्रिम भित्तियों के साथ-साथ प्रत्यास्थी प्रवाल प्रजातियों का सक्रिय रूप से पुनःरोपण किया जाना शामिल हो।
 - इन द्वीपों के जल की अद्वितीय जैव विविधता का अध्ययन और संरक्षण करने के लिये एक समर्पित समुद्री अनुसंधान केंद्र की स्थापना की जाए।
- **सांस्कृतिक अभयारण्य – स्वदेशी वरिसत का संरक्षण करना:** अतिक्रमण और अवांछित संपर्क को रोकने के लिये स्वदेशी जनजातियों के क्षेत्रों के आसपास बफर ज़ोन स्थापित किये जाएँ।
 - सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रम विकसित किये जाएँ जो आधुनिक चिकित्सा को पारंपरिक अभ्यासों के साथ जोड़ते हैं और स्वदेशी ज्ञान का सम्मान करते हैं।
 - पारंपरिक भाषाओं, रीति-रिवाजों और पारस्थितिकी ज्ञान के दस्तावेजीकरण एवं संरक्षण के लिये एक स्वदेशी ज्ञान एवं संस्कृति केंद्र की स्थापना की जाए।
 - जनजातीय क्षेत्रों के निकट पर्यटन पर कड़े नियम लागू किये जाएँ और उल्लंघन पर भारी जुर्माना लगाया जाए।
 - स्वदेशी समुदायों को अपने अधिकारों का दावा करने तथा उनकी भूमि को प्रभावित करने वाली नरिणयन प्रक्रियाओं में उनकी भागीदारी के लिये वधिक एवं प्रशासनिक सहायता प्रदान की जाए।
- **हरित पर्यटन – पारस्थितिकी पर्यटन और सतत् आगंतुक प्रबंधन:** एक व्यापक पारस्थितिकी पर्यटन रणनीति विकसित की जाए जो प्रत्येक द्वीप की वहन क्षमता के अध्ययन के आधार पर आगंतुकों की संख्या को सीमित कर सके।
 - पर्यावरण-अनुकूल आवासों और टूर ऑपरेटरों के लिये एक प्रमाणन कार्यक्रम लागू किया जाए, जहाँ संवहनीय अभ्यासों को प्रोत्साहित किया जाए।
 - द्वीपों के अद्वितीय पारस्थितिकी तंत्र और संस्कृतियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए गहन, शैक्षिक अनुभव का सृजन किया जाए तथा संरक्षण जागरूकता को बढ़ावा दिया जाए।
- **आपदा प्रत्यास्थता – प्रकृति के प्रकोप के वरिद्ध सुदृढीकरण:** भूकंपीय, सुनामी, चक्रवात और भूस्खलन चेतावनियों को एकीकृत करते हुए एक बहु-जोखमि पूर्व-चेतावनी प्रणाली का विकास किया जाए, ताकि सभी बसे हुए द्वीपों तक सूचना एवं चेतावनी का त्वरित प्रसार सुनिश्चित हो सके।
 - भूकंपीय गतिविधि, तूफानी लहरों और भूस्खलन के जोखिमों को ध्यान में रखते हुए सख्त भवन संहिता और भूमि-उपयोग विनियमनों को लागू किया जाए तथा मौजूदा महत्त्वपूर्ण अवसंरचना को इनके अनुकूल बनाया जाए।
 - नियमित सामुदायिक तैयारी अभ्यासों और जागरूकता कार्यक्रमों के साथ द्वीपों में आपदा-रोधी आश्रयों और निकासी मार्गों का एक नेटवर्क विकसित किया जाए।
 - आपदा प्रतरोधी अवसंरचना और प्रकृति आधारित समाधान (जैसे कि मैंग्रोव पुनरुद्धार और प्रवाल भित्ति संरक्षण) के निर्माण में निवेश किया जाए, ताकि तूफानों एवं सुनामी के वरिद्ध ये प्राकृतिक अवरोधक के रूप में कार्य कर सकें, साथ ही जैव विविधता को भी बढ़ाया जा सके।
- **जलवायु परिवर्तन के लिये अनुकूली रणनीतियाँ:** एक व्यापक जलवायु परिवर्तन अनुकूलन योजना को लागू किया जाए, जिसमें समुद्र-स्तर में वृद्धि का मानचित्रण और सभी बसे हुए द्वीपों के लिये भेद्यता आकलन शामिल हो।
 - प्रकृति आधारित तटीय रक्षा प्रणालियों का विकास किया जाए, जिसमें मैंग्रोव पुनरुद्धार को प्राथमिकता दी जाए जैसा इंजीनियरिंग समाधानों के साथ संयोजित करना शामिल है।
 - जलवायु-अनुकूल कृषि पद्धतियों को अपनाया जाए, जहाँ लवण-सहिष्णु फसल कस्मों और जल-कुशल कृषि तकनीकों को बढ़ावा दिया जाए।
 - चरम मौसमी घटनाओं के लिये एक पूर्व-चेतावनी प्रणाली स्थापित की जाए, साथ ही समुदाय-आधारित आपदा तैयारी कार्यक्रमों का निर्माण हो।
 - स्थानीय प्रभावों की नगरानी करने तथा वशिष्ट अनुकूलन रणनीति विकसित करने के लिये एक समर्पित जलवायु परिवर्तन अनुसंधान केंद्र की स्थापना की जाए।
- **द्वीप संपर्क – संवहनीय परिवहन नेटवर्क:** इलेक्ट्रिक नौकाओं, सौर ऊर्जा चालित जल टैक्सियों और पर्यावरण-अनुकूल भूमि परिवहन विकल्पों को संयुक्त करते हुए एक एकीकृत एवं संवहनीय परिवहन प्रणाली का विकास किया जाए।
 - शहरी क्षेत्रों में वाहनों के प्रवाह को अनुकूलतम करने तथा उत्सर्जन को कम करने के लिये स्मार्ट यातायात प्रबंधन प्रणाली लागू की

जाए।

- **ब्लू इकोनॉमी को बढ़ावा देना:** संवहनीय जलकृषि परियोजनाएँ वकिसति की जाएँ, देशी प्रजातियों पर ध्यान केंद्रित किया जाए और अपशष्ट को न्यूनतम करने के लिये चक्रीय अस्थव्यवस्था के सदिधांतों को अपनाया जाए।
 - एक संवहनीय उद्योग के रूप में **समुद्री शैवाल की खेती में नविश किया जाए जो कार्बन पृथक्करण (carbon sequestration)** में योगदान देगा और वैकल्पिक आजीविका भी प्रदान करेगा।
 - द्वीपों की समुद्री जैव विविधता के संभावित औषधीय एवं औद्योगिक अनुप्रयोगों का पता लगाने के लिये एक **समुद्री जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान केंद्र** की स्थापना की जाए।
 - प्रशिक्षण कार्यक्रमों, उपकरण आधुनिकीकरण और उत्तरदायी तरीके से **सी-फ्रूड पकड़ने के लिये प्रोत्साहन (incentives)** प्रदान करने के माध्यम से संवहनीय मत्स्यग्रहण अभ्यासों को बढ़ावा दिया जाए।
- **द्वीप विकास के लिये प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना:** सभी बसे हुए द्वीपों तक **हाई-स्पीड इंटरनेट कनेक्टिविटी** का वस्तितार किया जाए, ताकि दूरस्थ कार्य के अवसर उपलब्ध हो सकें और शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवा तक बेहतर पहुँच सुनिश्चित हो।
 - **वायु एवं जल गुणवत्ता, वन्यजीवों की गतिविधियों और पारस्थितिकी तंत्र** के स्वास्थ्य की रयिल-टाइम निगरानी के लिये **IoT-आधारित पर्यावरण निगरानी प्रणालियाँ** लागू की जाएँ।

अभ्यास प्रश्न: भारत की समुद्री सुरक्षा और वदिश नीति में अंडमान एवं नकिोबार द्वीप समूह के रणनीतिक महत्त्व की चर्चा कीजिये। इन द्वीपों के समक्ष कौन-सी चुनौतियाँ मौजूद हैं और उनके सतत विकास एवं सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिये क्या उपाय किये जाने चाहिये?

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. द्वीपों के नमिनलखिति में से कौन-सा युग्म 'दस डगिरी चैनल' द्वारा एक-दूसरे से अलग किया जाता है? (2014)

- (a) अंडमान और नकिोबार
- (b) नकिोबार और सुमात्रा
- (c) मालदीव और लक्षद्वीप
- (d) सुमात्रा और जावा

उत्तर: (a)

प्रश्न . नमिनलखिति में से किसमें प्रवाल भित्तियाँ हैं? (2014)

1. अंडमान और नकिोबार द्वीप समूह
2. कच्छ की खाड़ी
3. मन्नार की खाड़ी
4. सुंदरबन

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

- (a) केवल 1, 2 और 3
- (b) केवल 2 और 4
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (a)

प्रश्न . नमिनलखिति में से किस स्थान पर शोम्पेन जनजात पाई जाती है? (2009)

- (a) नीलगरि पहाड़ियाँ
- (b) नकिोबार द्वीप समूह
- (c) स्पीति घाटी
- (d) लक्षद्वीप द्वीप समूह

उत्तर: (b)

